RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा-12 इतिहास

हिंदी माध्यम

ARJUN BATCH

भक्ति सूफी परम्पराएं

Chapter-6 | Part-3

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?

1. भक्ति साहित्य का संकलन
2. बासवन्ना
3. अनुष्ठा और यर्थाथ संसार
4. उत्तरी भारत में धार्मिक उफान
5. दुशाले के नए ताने-बाने: इस्लामी परंपराएँ
6. शासकों और शासितों के धार्मिक विश्वास

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भक्ति साहित्य का संकलन

- दक्षिणी भारत में दसवीं शताब्दी आते-आते बारह अलवर (विष्णुभक्त) सन्तों की रचनाओं का संकलन किया गया।
- इस संकलन को ''नलयिरादिव्यप्रबंधम्'' नाम से जाना जाता है।

इस का अर्थ ''चार हजार पावन रचनाएँ'' है।

दसवीं शताब्दी में अप्पार संबंदर और सुंदरार की भक्ति की कविताएँ ''तवरम'' नामक संकलन में रखी गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER
mg

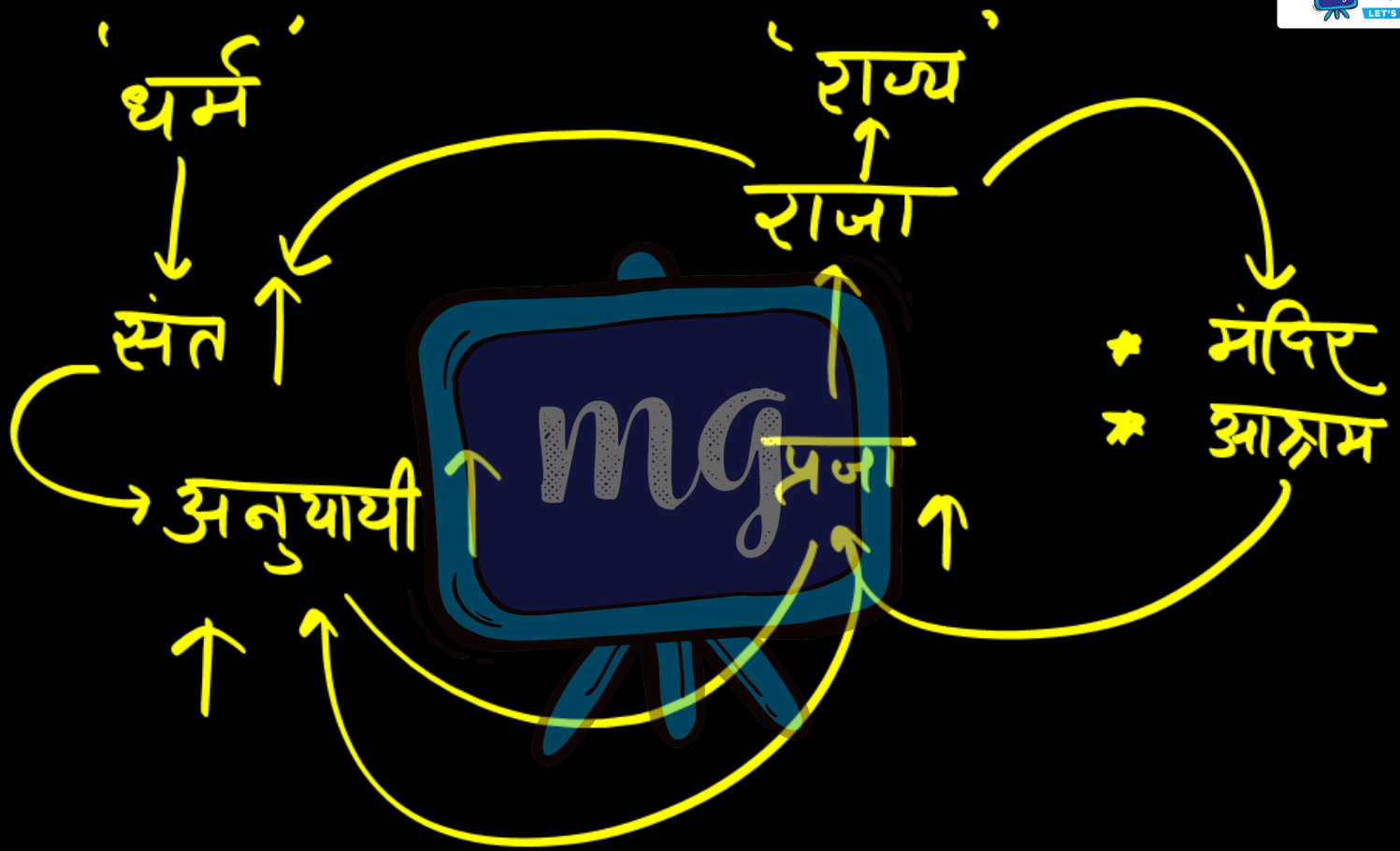

'धर्म'
संत
अनुयायी
'राज्य'
राजा
प्रजा
* मंदिर
* आश्रम

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

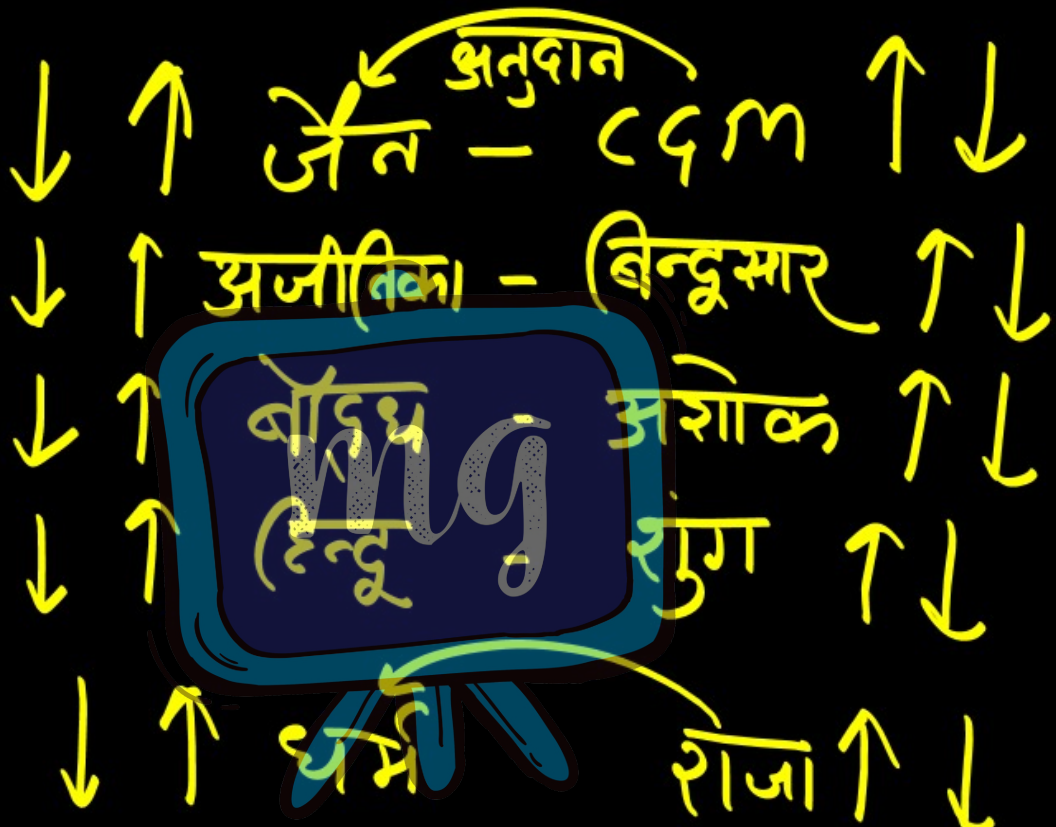

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

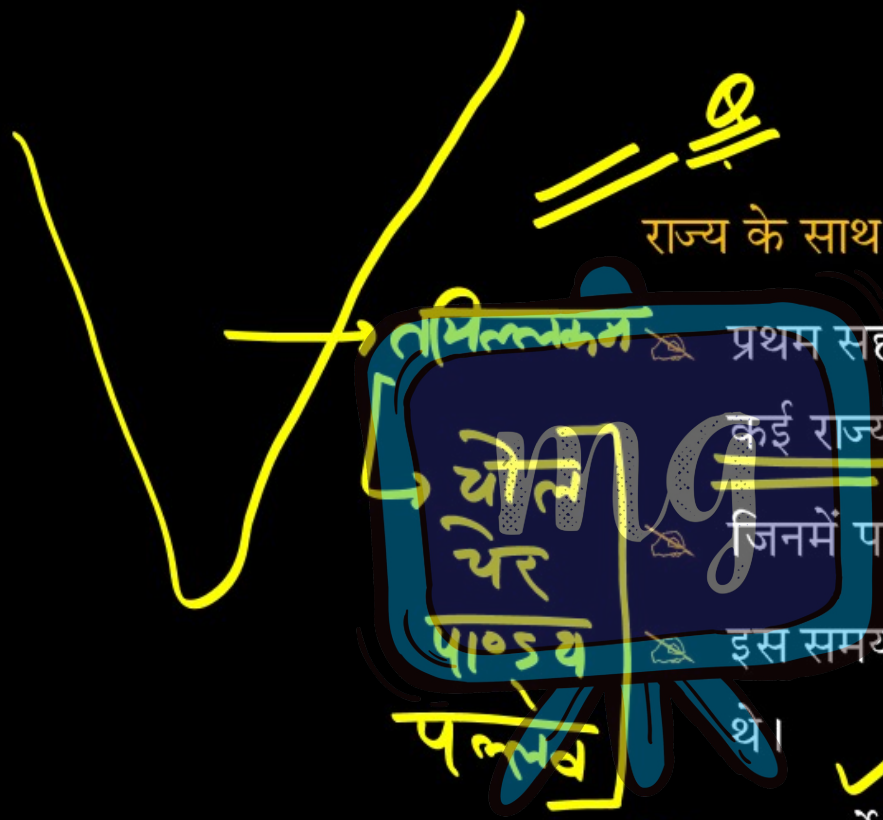

राज्य के साथ संबंध :-

- प्रथम सहस्त्राब्दी ई. के उत्तरार्ध में तमिल क्षेत्र में कई राज्यों का उद्भव व विकास हुआ।
- जिनमें पल्लव और पांड्य राज्य शामिल थे।
- इस समय दक्षिण भारत में जैन व बौध धर्म मौजूद थे।
- इन धर्मो को व्यापारी व शिल्पी वर्ग का आश्रय प्राप्त था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. धार्मिक समुदायों के राज्य के साथ संबंधो पर चर्चा करें?

Q. किस राजवंश के दौरान धातु की शिव प्रतिमा प्रचलन मे आई?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

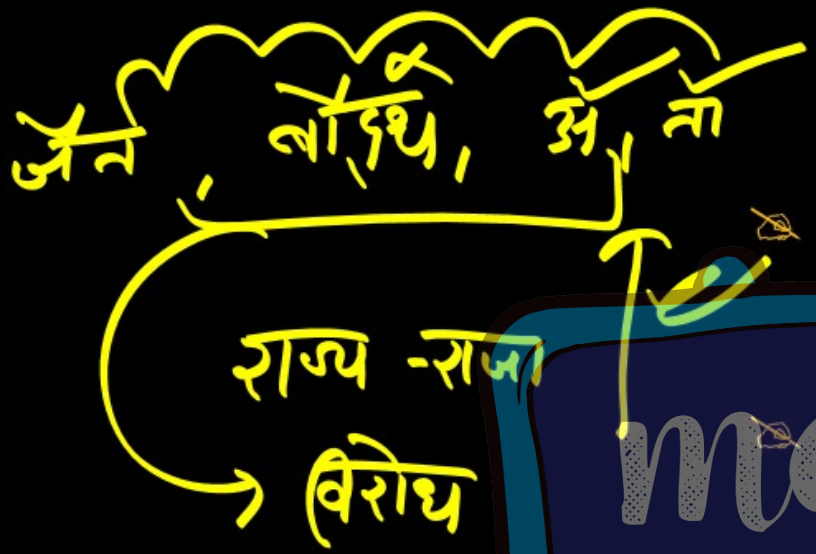

- इन धर्मों को राजकीय आश्रय, संरक्षण और अनुदान यदा-कदा ही प्राप्त होता था।
- तत्कालीन तमिल भक्ति रचनाओं की एक मुख्य विषय वस्तु बौध व जैन धर्म के प्रति उनका विरोध है।
- इतिहासकारों के अनुसार विरोध का मुख्य कारण धार्मिक समुदायों में राजकीय अनुदान को लेकर मुकाबला रहता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- नवीं से तेरहवीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत में शक्तिशाली चोल सम्राटों ने ब्राह्मणीय और भक्ति परंपरा को समर्थन किया।
- इन्होंने विष्णु और शिव मंदिरों के निर्माण हेतु भूमि अनुदान दिए।
- चोल सम्राटों की मदद से दक्षिण में चिदम्बरम, तंजावुर और गंगैकोंडचोलपुरम में विशाल शिव मंदिरों का निर्माण हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

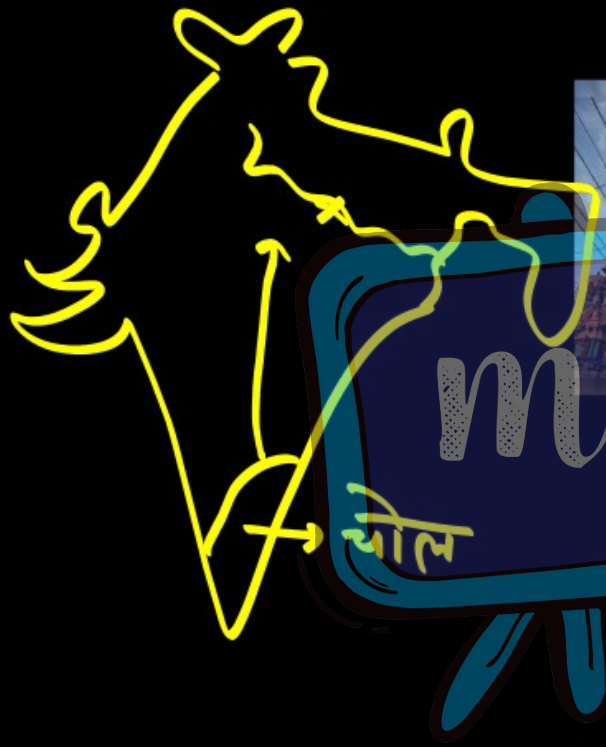

चिदम्बरम

तंजावुर

गंगैकोंडचोलपुरम

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कांस्य से ढाली गई शिव प्रतिमाओं का निर्माण भी इसी काल में हुआ।
- दक्षिण में अलवार व नयनार संत, वेल्लाल कृषकों से सम्मानित होते थे।
- तत्कालीन शासकों ने इसी कारण से उनका समर्थन पाने का प्रयास किया।
- चोल सम्राटों ने दैवीय समर्थन या अंश होने का दावा किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

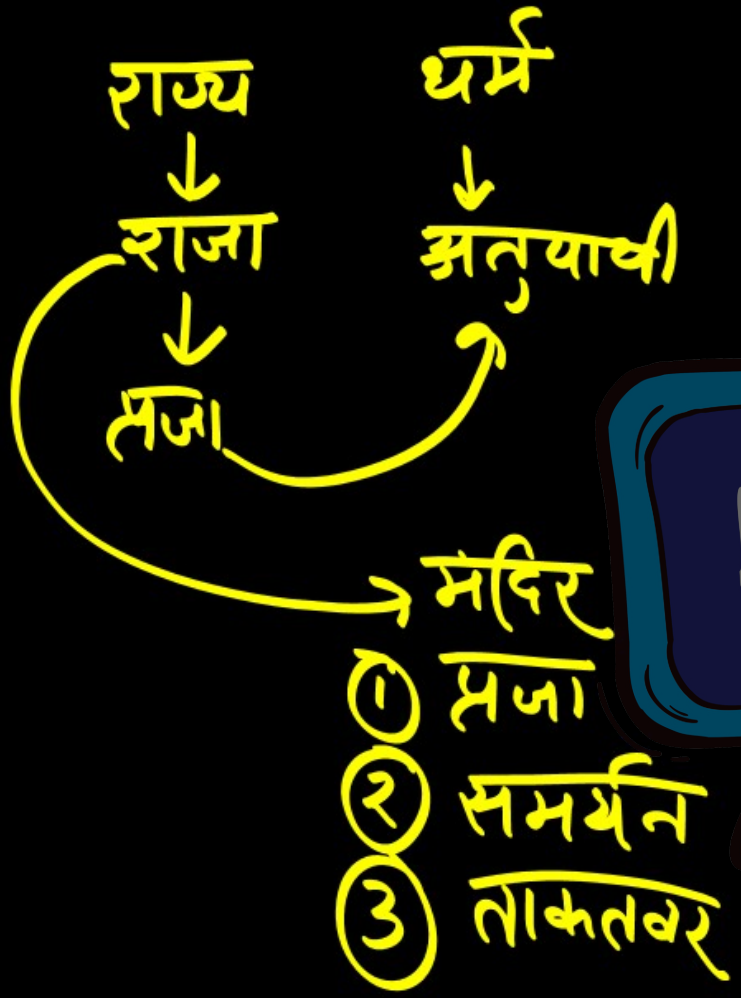

- सत्ता के प्रदर्शन के लिए सुंदर मंदिरों का निर्माण करवाया।
- मंदिरों में सुन्दर पत्थर व धातुओं से सुसज्जित मूर्तियां स्थापित की।
- चोल सम्राट परांतक प्रथम ने संत कवि अप्पार संबंदर और सुंदरार की धातु प्रतिमाएँ एक शिव मंदिर में स्थापित करवाई जिन्हें उत्सव में एक जुलुस में निकाला जाता था।

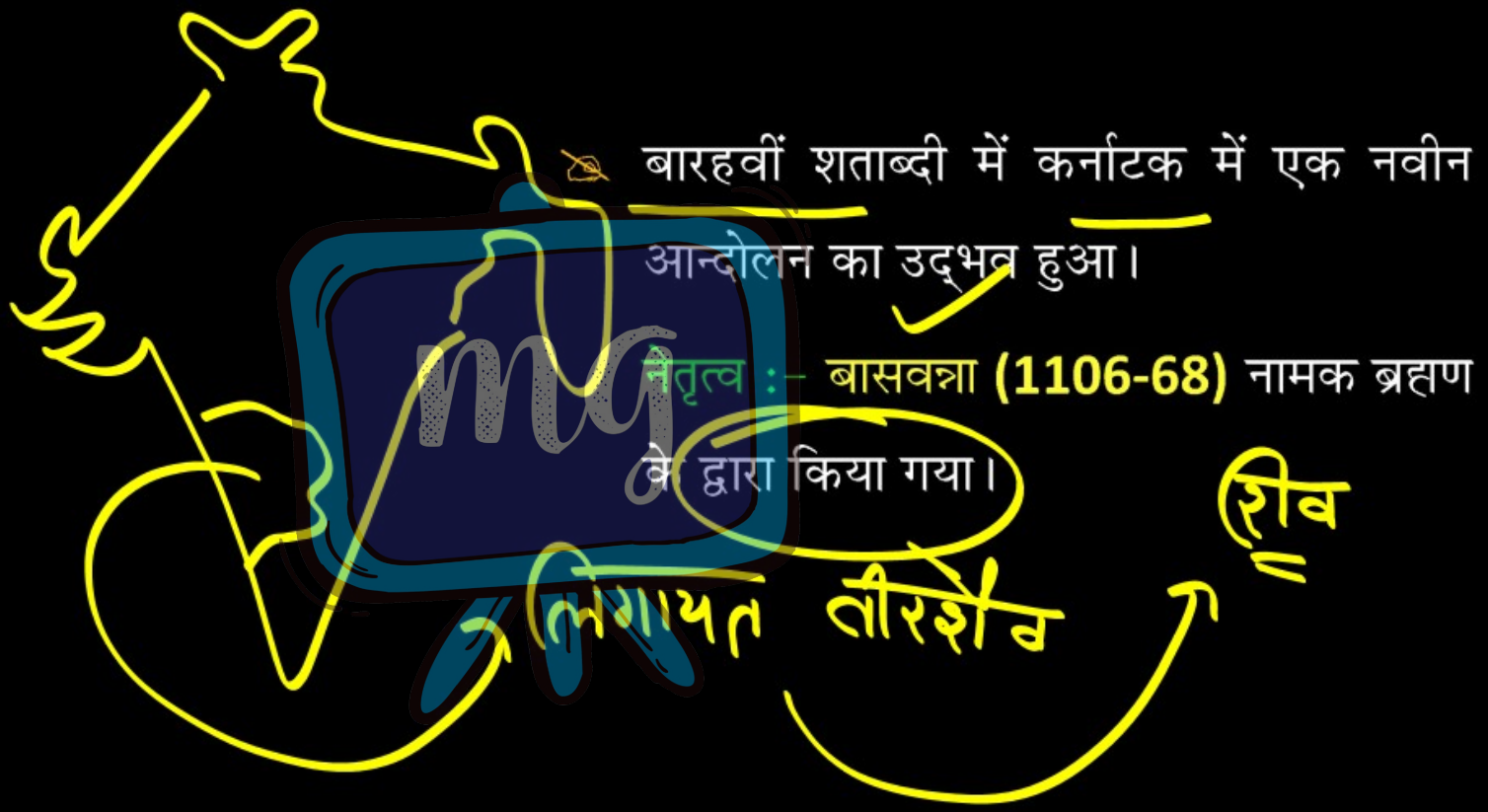

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बारहवीं शताब्दी में कर्नाटक में एक नवीन आन्दोलन का उद्भव हुआ।

नेतृत्व :- बासवन्ना (1106-68) नामक ब्रह्मण के द्वारा किया गया।

लिंगायत वीरशैव

शिव

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बासवन्ना

- ये कलचुरी के राजा के दरबार में मंत्री थे।
- इनके अनुयायी वीरशैव (शिव के वीर) व लिंगायत कहलाए।
- ये शिव की आराधना लिंग के रूप में करते है।
- लिंगायत समुदाय के पुरुष वाम स्कंध (बायां कंधा) पर चाँदी के एक पिटारे में एक लघु लिंग को धारण करते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

'समुदाय' (भेदभाव)

- लिंगायतों ने जाति की अवधारणा और कुछ समुदायों के "दूषित" होने की ब्राह्मणीय अवधारणा का विरोध किया।
- पुनर्जन्म के सिद्धान्तों पर भी प्रश्न चिह्न लगाया।
- इन सब कारणों से ही ब्रह्मणीय सामाजिक व्यवस्था में जिन समुदायों को गौण स्थान मिला था वे लिंगायतों के अनुयायी हो गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लिंगायतों ने वयस्क विवाह और विधवा पुनर्विवाह आदि को भी मान्यता प्रदान की, जिन्हे धर्मशास्त्रों में अस्वीकार किया गया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अनुष्ठान और यथार्थ संसार

यह बासवन्ना द्वारा रचित एक वचन है:

जब वे एक पत्थर से बने सर्प को देखते हैं
तो उस पर दूध चढ़ाते हैं
यदि असली साँप आ जाए तो कहते हैं
"मारो-मारो"।
देवता के उस सेवक को, जो भोजन परोसने
पर खा सकता है वे कहते हैं "चले जाओ!
चले जाओ।"
किन्तु ईश्वर की प्रतिमा को जो खा नहीं
सकती, वे व्यंजन परोसते हैं।

१. तलियारदित्य संबंधम्

१. तनरम्

१ राज्य के संबंध → चोल → वेल्लाल कृषक → बासवन्ना → वीरशैव लिंगायत → धार्मिक मान्यता

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तरी भारत में धार्मिक उफान

- 14 वीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में अलवार और नयनार संतों की रचनाओं जैसा कोई ग्रन्थ प्राप्त नहीं हुआ।
- हालांकि उत्तरी भारत में भी विष्णु और शिव जैसे देवताओं की उपासना मंदिरों में की जाती थी।

➤ **इस भिन्नता की क्या वजह हो सकती है ?**

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कुछ इतिहासकारों का मत है कि-

- उत्तरी भारत में यह वह काल था जब अनेक राजपूत राज्यों का उदय हुआ। इन सभी राज्यों में ब्रह्मणों का महत्त्वपूर्ण स्थान था और वे ऐहिक तथा आनुष्ठानिक दोनों ही कार्य करते थे।

ब्रह्मणों की इस प्रभुसत्ता को सीधे चुनौती देने का प्रयास शायद किसी ने नहीं किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसी समय वे धार्मिक नेता जो रूढ़िवादी ब्रह्मणीय साँचे के बाहर थे, उनके प्रभाव में विस्तार हो रहा था।
- अनेक नवीन धार्मिक नेताओं ने वेदों की सत्ता को चुनौती दी और अपने विचार आम लोगों की भाषा में सामने रखे।
- अपनी लोकप्रियता के बावजूद नवीन धार्मिक नेता विशिष्ट शासक वर्ग का प्रश्रय हासिल करने की स्थिति में नहीं थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसी स्थिति में भारत में तुर्कियों का (इस्लाम धर्म) आगमन हुआ।
- दिल्ली सल्तनत की स्थापना से राजपूत राज्यों का और उनसे जुड़े ब्रह्मणों का पराभव हुआ।
- इन परिवर्तनों का प्रभाव संस्कृति और धर्म पर भी पड़ा।
- सूफियों का आगमन इन परिवर्तनों का एक महत्त्वपूर्ण अंग था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दुशाले के नए ताने-बाने: इस्लामी परंपराएँ

- प्रथम सहस्त्राब्दी ईसवी में अरब व्यापारी समुद्र के रास्ते पश्चिमी भारत के बंदरगाहों तक आए।
- इसी समय मध्य ऐशिया से लोग देश के उत्तर-पश्चिम प्रातों में आकर बस गए।
- 7 वीं शताब्दी में इस्लाम के उद्भव के बाद में यह क्षेत्र इस्लामी विश्व का हिस्सा बन गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शासकों और शासितों के धार्मिक विश्वास

- 711 ईसवीं में मुहम्मद बिन कासिम नाम के अरब सेनापति ने सिंध को विजित कर लिया।
- बाद में तुर्क और अफगानों ने दिल्ली सल्तनत की नींव रखी।
- समय के साथ दक्कन और अन्य भागों में भी सल्तनत की सीमा का प्रसार हुआ।
- इन क्षेत्रों में इस्लाम शासकों का स्वीकृत धर्म था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मुसलमान शासकों को उलमा के मार्गदर्शन पर चलना होता था।

उलमा :- इस्लाम धर्म के ज्ञाता थे।

- शासन के धार्मिक व कानूनी और अध्यापन संबंधी जिम्मेदारी निभाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शरिया

शरिया मुसलमान समुदाय को निर्देशित करने वाला कानून है। यह कुरान शरीफ़ और हदीस पर आधारित है। हदीस का अर्थ है पैगम्बर साहब से जुड़ी परंपराएँ जिनके अंतर्गत उनके स्मृत शब्द और क्रियाकलाप भी आते हैं।

जब अरब क्षेत्र से बाहर इस्लाम का प्रसार हुआ जहाँ के आचार-व्यवहार भिन्न थे तो क़ियास (सदृशता के आधार पर तर्क) और

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इजमा (समुदाय की सहमति) को भी कानून का स्रोत माना जाने लगा। इस तरह शरिया, कुरान, हदीस, क़ियास और इजमा से उद्भूत हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उलमा से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे शासन में शरिया का अमल (पालन) सुनिश्चित करवाएँगे।
- किंतु भारतीय उपमहाद्विप में स्थिति जटिल थी क्योंकि यहाँ बड़ी जनसंख्या इस्लाम धर्म को मानने वाली नहीं थी।
- इस प्रकार जिम्मी अर्थात् संरक्षित श्रेणी का प्रादुर्भाव हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जिम्मी :- जिम्मी वे लोग थे जो उद्घटित धर्मग्रन्थ को मानते थे जैसे इस्लामी शासकों के क्षेत्र में रहने वाले यहूदी और ईसाई। ये लोग जजिया नामक कर चुका कर मुसलमान शासकों द्वारा संरक्षण दिये जाने के अधिकारी हो जाते थे। भारत में इसके अन्तर्गत हिन्दूओं को भी शामिल कर लिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- वास्तव में शासक शासितों की तरफ़ काफ़ी लचीली नीति अपनाते थे। उदाहरणतः, बहुत से शासकों ने भूमि अनुदान व कर की छूट हिंदू, जैन, पारसी, ईसाई और यहूदी धर्मसंस्थाओं को दी तथा साथ ही गैर-मुसलमान धार्मिक नेताओं के प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त किया। ऐसे अनुदान, अनेक मुगल बादशाहों जिनमें अकबर और औरंगज़ेब शामिल थे, द्वारा दिए गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

खम्बात का गिरजाघर

यह उद्धरण उस फ़रमान (बादशाह के हुक्मनामे) का अंश है जिसे 1598 में अकबर ने जारी किया :

हमारे बुलंद और मुकद्दस (पवित्र) ज़ेहन में पहुँचा है कि यीशु की मुकद्दस जमात के पादरी खम्बायत गुजरात के शहर में इबादत के लिए (गिरजाघर) एक इमारत की तामीर (निर्माण) करना चाहते हैं;

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इसलिए यह शाही फ़रमान.... जारी किया जा रहा है.... खम्बायत के महानुभाव किसी भी तरह उनके रास्ते में न आएँ और उन्हें गिरजाघर की तामीर करने दें जिससे वे अपनी इबादत कर सकें। यह ज़रूरी है कि बादशाह के इस फ़रमान की हर तरह से तामील (पालन) हो।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लोक प्रचलन में इस्लाम

इस्लाम के आगमन के बाद जो परिवर्तन हुए वे शासक वर्ग तक ही सीमित नहीं थे, अपितु पूरे उपमहाद्वीप में दूरदराज़ तक और विभिन्न सामाजिक समुदायों–किसान, शिल्पी, योद्धा, व्यापारी के बीच फैल गए। जिन्होंने इस्लाम धर्म कबूल किया उन्होंने सैद्धांतिक रूप से इसकी पाँच मुख्य 'बातें' मानीं :

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. अल्लाह एकमात्र ईश्वर है; पैगम्बर मोहम्मद उनके दूत (शाहद) हैं;
2. दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ी जानी चाहिए;
3. खैरात (ज़कात) बाँटनी चाहिए;
4. रमज़ान के महीने में रोज़ा रखना चाहिए
5. हज के लिए मक्का जाना चाहिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

समुदायों के नाम

- हम अधिकतर हिन्दू और मुसलमान जैसे शब्दों को धार्मिक समुदायों का घोतक मान लेते हैं।
- किन्तु जिन इतिहासकारों ने आठवीं से चौदहवीं शताब्दी के मध्य संस्कृत ग्रंथों और अभिलेखों का अध्ययन किया है वे इस तथ्य को उजागर करते है कि–

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इनमें मुसलमान शब्द का शायद ही कहीं प्रयोग हुआ है।
- लोगों का वर्गीकरण उनके जन्मस्थान के आधार पर किया गया था।
  - तुर्की मुसलमानों को तुरूष्क
  - तजाकिस्तान से आए लोगों को ताजिक
  - फारस के लोगों को पारसीक नाम से संबोधित किया गया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इन प्रवासी समुदायों के लिए एक अधिक सामान्य शब्द म्लेच्छ था।

म्लेच्छ :-

यह बात को इंगित करता है कि ये वर्ण व्यवस्था के नियमों का पालन नहीं करते थे। और ऐसी भाषाएँ बोलते थे जो संस्कृत से नहीं उपजी थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सूफ़ीवाद और तसव्वुफ़

सूफ़ीवाद उन्नीसवीं शताब्दी में मुद्रित एक अंग्रेज़ी शब्द है। इस सूफ़ीवाद के लिए इस्लामी ग्रंथों में जिस शब्द का इस्तेमाल होता है वह है तसव्वुफ़ (कल्पना, विचार, ख्याल)।

कुछ विद्वानों के अनुसार यह शब्द 'सूफ' से निकलता है जिसका अर्थ ऊन है। यह उस खुरदुरे ऊनी कपड़े की ओर इशारा करता है जिसे सूफ़ी पहनते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अन्य विद्वान इस शब्द की व्युत्पत्ति 'सफ़ा' से मानते हैं जिसका अर्थ है साफ़ (पवित्र)। यह भी संभव है कि यह शब्द 'सफ़ा' से निकला हो जो पैगम्बर की मस्जिद के बाहर एक चबूतरा था जहाँ निकट अनुयायियों की मंडली धर्म के बारे में जानने के लिए इकट्ठी होती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सूफ़ीमत का विकास

- इस्लाम की आरंभिक शताब्दियों में कुछ लोगों का रहस्यवाद और वैराग्य की ओर झुकाव बढ़ा, इन्हें सूफ़ी कहा जाने लगा।
- इन लोगों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।
- उन्होंने पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-कामिल (आदर्श मानव) बताते हुए उनका अनुसरण करने की सीख दी।
- सूफ़ियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

खानकाह और सिलसिला :

- ग्यारहवीं शताब्दी तक आते-आते सूफीवाद एक पूर्ण विकसित आन्दोलन था।
- सूफी अपने को एक संगठित समुदाय-खानकाह के इर्द-गिर्द स्थापित करते थे।
- खानकाह का नियंत्रण शेख/ पीर अथवा मुर्शीद के हाथ में था।
- वे अनुयायियों की भर्ती करते थे और अपने वारिस (खलीफा) की नियुक्ति करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 12 वीं शताब्दी के आस-पास सूफी सिलसिलों का गठन होने लगा था।
- सिलसिले का अर्थ :- सिलसिले का शाब्दिक अर्थ है, जंजीर जो शेख और मुरीद के बीच एक निरंतर रिश्ते की घोतक है जिसकी पहली अटूट कड़ी पैगम्बर मोहम्मद से जुड़ी है।
- पीर की मृत्यु के बाद उसकी दरगाह उसके मुरीदों के लिए भक्ति का स्थल बन जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस तरह पीर की दरगाह पर जियारत के लिए जाने की खासतौर से उनकी बरसती के अवसर पर, परिपाटी चल निकली।
- इस परिपाटी को उर्स (पीर की आत्मा का ईश्वर से मिलन) कहा जाता था।
- इस तरह शेख का वली के रुप में आदर करने की परिपाटी शुरु हुई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सिलसिलों के नाम

ज़्यादातर सूफ़ी वंश उन्हें स्थापित करने वालों के नाम पर पड़े। उदाहरणत:, कादरी सिलसिला शेख अब्दुल कादिर जिलानी के नाम पर पड़ा। कुछ अन्य सिलसिलों का नामकरण उनके जन्मस्थान पर हुआ जैसे चिश्ती नाम मध्य अफगानिस्तान के चिश्ती शहर से लिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

ख़ानक़ाह के बाहर

- कुछ रहस्यवादियों ने सूफ़ी सिद्धांतों की मौलिक व्याख्या के आधार पर नवीन आंदोलनों की नींव रखी।
- ख़ानक़ाह का तिरस्कार करके यह रहस्यवादी, फ़क़ीर की ज़िंदगी बिताते थे।
- निर्धनता और ब्रह्मचर्य को उन्होंने गौरव प्रदान किया। इन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता था– कलंदर, मदारी, मलंग, हैदरी इत्यादि।

- शरिया की अवहेलना करने के कारण उन्हें बे-शरिया कहा जाता था।
- इस तरह उन्हें शरिया का पालन करने वाले (बा-शरिया) सूफ़ियों से अलग करके देखा जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उपमहाद्वीप में चिश्ती सिलसिला

- बारहवीं शताब्दी के अंत में भारत आने वाले सूफी समुदायों में चिश्ती सबसे अधिक प्रभावशाली रहे।
- कारण :
  1. इन्होंने अपने आपको स्थानीय परिवेश में अच्छी तरह ढाला और
  2. भारतीय भक्ति परंपरा की कई विशिष्टताओं को भी अपनाया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चिश्ती सिलसिले के मुख्य उपदेशक		
सूफ़ी	मृत्यु का वर्ष	दरगाह का स्थान
शेख मुइनुद्दीन चिश्ती	1235	अजमेर (राजस्थान)
ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी	1235	दिल्ली
शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर	1265	अजोधन (पाकिस्तान)
शेख निज़ामुद्दीन औलिया	1325	दिल्ली
शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए-देहली	1356	दिल्ली